RAJPUT TUTORIALS

छत्तीसगढ़ का इतिहास – राजर्षितुल्य कुल वंश से बाणवंश तक

Name : ..... Date : ...../...../.....

❖ राजर्षितुल्य कुल वंश

- ✓ 5वीं शताब्दी ईस्वी
- ✓ रायपुर जिले के आरंग से मिले ताम्रपत्र से इस वंश के शासक भीमसेन-II का उल्लेख मिलता है। जिसमें भीमसेन-II सर्वप्रतापी शासक बताया गया है।
- ✓ राजधानी – आरंग
- ✓ शासक –
  1. शूरा
  2. दायित - I
  3. विभीषण
  4. भीमसेन - I
  5. दायित - II
  6. भीमसेन - II
- ✓ भीमसेन -II के आरंग ताम्रपत्र को सोन नदी (स्वर्ण नदी) के तट से जारी किया गया था।
- ✓ इस वंश के द्वारा गुप्त संवत् का प्रयोग किया जाता था इसलिए यह भी कहा जा सकता है कि इस वंश के शासक गुप्तों की अधिसत्ता स्वीकार करते थे।

❖ शरभपुरीय वंश

- ✓ शासनकाल – 5वीं सदी – 6वीं सदी
- ✓ राजधानी – शरभपुर (सारंगढ़/संबलपुर)
- ✓ संस्थापक – शरभराज

शरभराज का उल्लेख गुप्तशासक भानुगुप्त के ''एरण (510 ई.) अभिलेख'' से प्राप्त होता है। इस वंश को अमरार्यकुल वंश भी कहा जाता है।

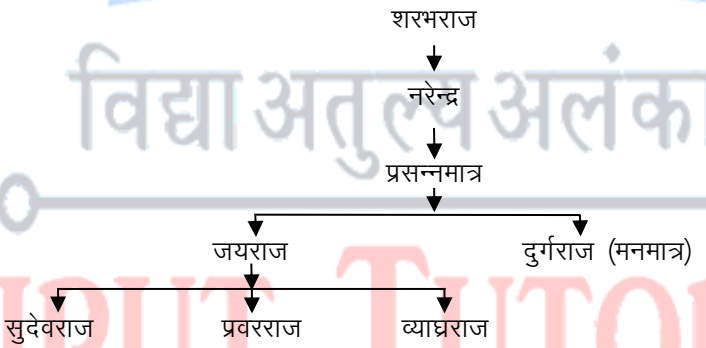

नरेन्द्र –

- ✓ उपनाम – भरतबल
- ✓ पिपरूदुला (सारंगढ़) और कुरूद ताम्रपत्र (धमतरी)

प्रसन्नमात्र –

- ✓ सर्वप्रतापी शासक
- ✓ निडिला (लीलागर) नदी के तट पर प्रसन्नपुर/प्रसन्नमात्रपुर (मल्हार) शहर बसाया।
- ✓ गरूड़, शंख एवं चक्र युक्त सोने के सिक्के चलवाए।

सुदेवराज –

- ✓ कौवाताल अभिलेख (महासमुंद)
- ✓ इस अभिलेख से सुदेवराज के सामंत इंद्रबल की जानकारी प्राप्त होती है।

विद्या अतुल्य अलंकार
RAJPUT TUTORIALS

व्याघ्रराज (प्रवरराज-II) –

- ✓ अयोग्य शासक

❖ पाण्डु/सोम वंश

- ✓ शासन काल – 6वीं – 8वीं शताब्दी
- ✓ राजधानी – सिरपुर

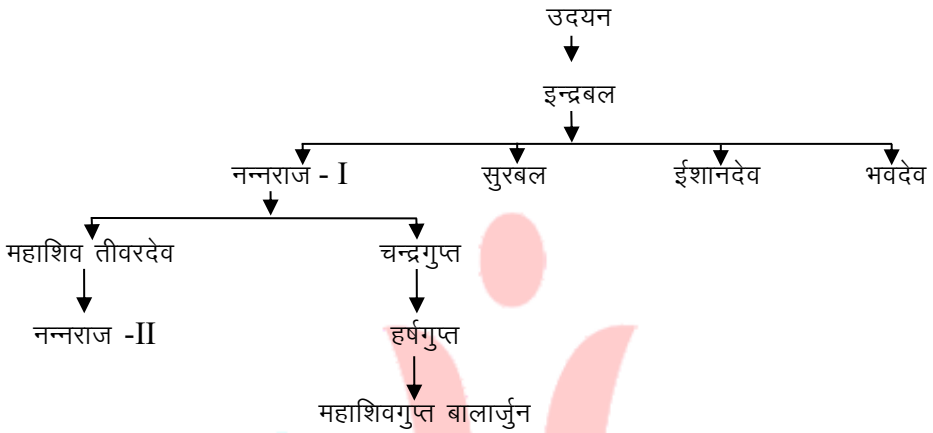

उदयन
↓
इन्द्रबल
↓
- नन्नराज - I
  - महाशिव तीवरदेव
    - ↓ नन्नराज -II
  - चन्द्रगुप्त
    - ↓ हर्षगुप्त
      - ↓ महाशिवगुप्त बालार्जुन
- सुरबल
- ईशानदेव
- भवदेव

उदयन –

- ✓ आदिपुरुष
- ✓ इन्द्रबल का पिता

इन्द्रबल –

- ✓ पाण्डुवंश का संस्थापक

नन्नराज– I –

- ✓ इन्द्रबल का उत्तराधिकारी
- ✓ अपने तीन भाइयों को मण्डलाधिपति के रूप में स्थापित किया।
- ✓ तीन भाई – 1. सुरबल
  2. ईशानदेव – खरौद के लक्ष्मणेश्वर मंदिर (लाखा–चाऊंर) का निर्माण कराया।
  – खरौद का प्राचीन नाम इन्द्रबल के नाम – "इन्द्रपुर"
  3.भवदेव – रणकेशरी (जानकारी भांदक शिलालेख)

महाशिव तीवरदेव –

- ✓ कोसल तथा उत्कल तक राज्य का विस्तार
- ✓ उपाधि – "सकल कोसलाधिपति"
- ✓ राजिम और बालोद से तीन ताम्रपत्र प्राप्त हुए हैं।

नन्नराज – II

- ✓ महाशिव तीवरदेव का पुत्र
- ✓ एकमात्र ताम्रपत्र अडभार से प्राप्त
- ✓ राज्यावधि अल्प थी।

चन्द्रगुप्त

- ✓ महाशिव तीवरदेव का अनुज, नन्नराज – II का चाचा

हर्षगुप्त

- ✓ चन्द्रगुप्त का पुत्र
- ✓ मगध के मौखरी राजा सूर्यवर्मा की पुत्री वासटादेवी से विवाह
- ✓ वासटादेवी वैष्णव मत को मानने वाली थीं

विद्या अतुल्य अलंकार
RAJPUT TUTORIALS

- ✓ पुत्र – महाशिवगुप्त बालार्जुन
- ✓ हर्षगुप्त के मुत्यु उपरांत वासटादेवी ने उनकी स्मृति में लक्ष्मण मंदिर की नींव रखी।
- ✓ लक्ष्मण मंदिर – उत्तर गुप्त वास्तुकला का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण।

महाशिवगुप्त बालार्जुन (595 – 655 ई.)

- ✓ लगभग 60 वर्षों का शासन
- ✓ शैव धर्मावलंबी
- ✓ सभी धर्मों के प्रति सहिष्णु
- ✓ सिरपुर का शिलालेख – सिरपुर से महाशिवगुप्त बालार्जुन के 27 ताम्रपत्र प्राप्त हुए हैं।

महाशिवगुप्त बालार्जुन के समकालीन शासक

कन्नौज –

शासक – हर्षवर्धन – पुष्यभुतिवंश या वर्धनवंश

बादामी या वातापी, (कर्नाटक के बागलकोट का तालुका) –

शासक – पुलकेशिन – II – चालुक्य वंश

कांचीपुरम (तमिलनाडु)–

शासक – नरसिंह वर्मन – पल्लव वंश

हर्षवर्धन का कवि बाणभट्ट – रचना – ''हर्षचरित''

पुलकेशिन - II का कवि रवीकीर्ति – रचना – ''एहोल प्रशस्ति''

- ➢ हर्षवर्धन के शासन काल में प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग भारत आया।
- ➢ छत्तीसगढ़ में महाशिवगुप्त बालार्जुन के शासनकाल में

महाशिवगुप्त बालार्जुन :–

- ✓ पिता – हर्षगुप्त
- ✓ माता – वासटादेवी
- ✓ लक्ष्मण मंदिर का निर्माण कराया (पूर्ण कराया)
- ✓ 'परम महेश्वर' की उपाधि धारण की।
- ✓ इनके शासन काल में सिरपुर – बौद्ध केन्द्र था।
- ✓ दो बौद्ध विहार – 1. आनंद प्रभु कुटी विहार
  2. स्वास्तिक विहार
- ✓ 639 ई. प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग सिरपुर आया।
- ✓ ह्वेनसांग ने अपनी रचना – सी–यू–की में छत्तीसगढ़ को कियासलो से संबोधित किया।
- ✓ बाल्यावस्था में धनुर्विद्या में पारंगत इसलिए नाम बालार्जुन पड़ा।
- ✓ पुलकेशिन- II के कवि रवीकीर्ति द्वारा रचित एहोल प्रशस्ति में उल्लेख।
- ✓ महाशिवगुप्त बालार्जुन के शासन काल को दक्षिण कोसल या छत्तीसगढ़ के इतिहास का स्वर्णकाल कहा जाता है।

इतिहासकारों के अनुसार पाण्डुवंश को महाशिवगुप्त बालार्जुन के शासनकाल से सोमवंश के रूप में भी जाना गया।
कारण – शैव धर्मावलंबी होना।

निज अतुल्य अलंकार
RAJPUT TUTORIALS

❖ **बाणवंश (9वीं शताब्दी) (870 – 895 ई.)**

- ✓ राजधानी – पाली (कोरबा)
- ✓ शासक – 1. महामण्डलेश्वर मल्लदेव
  2. विक्रमादित्य (पिता – महामण्डलेश्वर मल्लदेव) – पाली के शिव मंदिर का निर्माण कराया।
- ✓ पाली के शिव मंदिर के द्वार पर उत्कीर्ण लेख से इस वंश के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।
- ✓

महत्वपूर्ण :–

1. प्रयागप्रशस्ति – समुद्रगुप्त – हरिषेण – वाकाटक और नलवंश की जानकारी
2. एरण अभिलेख – भानुगुप्त – शरभपुरीय शासक शरभराज की जानकारी
3. एहोल प्रशस्ति – पुलकेशिन - II – रवीकीर्ति – पाण्डु/सोम शासक महाशिवगुप्त बालार्जुन की जानकारी

विद्या अतुल्य अलंकार
RAJPUT TUTORIALS